रात्रि क्लास 28/12/68 ओम शांति

(सभी अनुभव सुना रहे थे) सभी यही सुनावेंगे कि हम पहले कुछ भी नहीं जानते थे। कु(छ) नहीं समझते थे। बाप को ही नहीं जानते थे गोया कुछ भी नहीं जानते थे। बाप कहते हैं बच्चे तुम बिल्कुल बेसमझ थे। तुम स्वर्ग को, श्रीकृष्ण पुरी को याद करते थे जिससे कोई फायदा नहीं होता था। शिव को याद (करते) थे; परन्तु ऑक्युपेशन समझने बिगर। परिचय बिगर तुम्हारा कुछ बनता नहीं था। सुबह को कुत्ते जब भोंकते .... बहुत कहते हैं कुत्ते भी भगवान को याद करते हैं। अभी मनुष्य ही नहीं जानते तो उनकी प्रार्थना करने .... क्या फायदा। मुसलमानों की ईद होती है तो कितना झुकते हैं। दूर से पता पड़ता है जैसे भेड़ों का झुण्ड है। बाप को याद करने लिये माथा टेकने की दरकार नहीं। बाप रहते भी ऊपर में हैं। यहां नमन करने से ..... फायदा। जानते ही नहीं। सर्वव्यापी कह देते गोया कुछ भी नहीं जानते हैं। बाप तो टीचर है। आते हैं ....। हरेक स्टूडेन्ट जानते हैं जितना पढ़ेंगे उतना ही ऊंच पद पावेंगे। टीचर थोड़े ही महर करेंगे। जो (जै)सा पढ़ेंगे पद पावेंगे। यहां भी जितना पढ़ेंगे बाप को याद करेंगे। मैं अगर कृपा करूं तो सभी पर करूँ ना। बच्चों का मैं बाप हूँ। पढ़ाता हूँ। फिर क्यों नम्बरवार पद पाते हैं। कोई क्या बनते हैं, कोई क्या ब(बनते)

28/12/68 3

जानते हैं यह बच्चा पढ़ता नहीं है। यह डिस–सर्विस कर रहे हैं चण्डाल ही बनेंगे। समझाने से और ही सामना करते हैं। ऐसा पार्ट है। चण्डाल भी तो चाहिए ना। राजा के अलग प्रजा के अलग होते हैं। जो पढ़ते नहीं हैं तो बाप क्या करेंगे। कल्प–कल्प जो जिसने जो पद पाया है वह पावेंगे। पुरूषार्थ ही वह करेंगे। नौकर–चाकर, प्रजा सभी यहां ही बनेंगे। क्या आशीर्वाद करूँ की नौकर न बनो। बच्चों को समझाना चाहिए रामसम्प्रदाय और रावण सम्प्रदाय की युद्ध है। गायन है रावण सम्प्रदाय बहुत है। वह आते ही हैं रावण राज्य में। सतयुग में आ न सके। अभी राम सम्प्रदाय स्थापन करने बेहद का बाप खुद आते हैं। बाप के लिये कह देते कच्छ–मच्छ अवतार, परशुराम आवतार। वह जानवर, वह मनुष्य। फिर कहते कुल्हाड़ा उठाया। ऐसे हो कैसे सकता। इस समय ऐसे मनुष्य होते हैं। हैम्बर उठाये सोये हुये में ही ऐसे मारते हैं जो मर ही जाते हैं। परशुराम फिर कौन था। कुल्हाड़ी से मारा जाता है क्या। मनुष्य यह सभी सत्य समझते हैं। सभी बातों में सत्य सत्य करते रहते हैं। हरिश्चन्द्र की कथा सुनते थे कितनी लम्बी–चौड़ी हिस्ट्री है। है कुछ भी नहीं। बनाने वालों की कमाल है। मनुष्य भी झूठ ही झूठ बातें सुनाते हैं। इस समय तो बहुत बातें बनाकर किसका माथा ही खराब कर देते हैं। मनुष्य मत पर कब विश्वास नहीं करना चाहिए। धोखा खा लेते हैं। मनुष्य मत से गिरते2 यहां आकर पहुंचे हो। सीढ़ी जरूर उतरनी ही (है)। फिर बाप आकर चढ़ाते हैं। जिन का मिसाल है ना। बोला काम दो नहीं तो खा जावेंगे। तो बोला सीढ़ी–चढ़ो उतरो। कहानियां है ना। अभी तुम बच्चों को अविनाशी शान्ति मिलती है। विश्व में शान्ति भी सभी चाहते हैं। शान्ति कौन स्थापन करेंगे, आगे किसने की थी? पता नहीं है तो फिर शान्ति शान्ति क्यों करते हो। मनुष्य ....नते कुछ भी नहीं हैं। शान्ति का सागर बाप है तो इनसे ही शान्ति मिलेंगी ना। तुम पूछो तो सही शान्ति (चा)हते हो? क्या विश्व में शान्ति में शान्ति चाहते हो? ब्रह्मलोक को शान्ति समझते हो फिर तो मरना पड़ेगा। खुद मरने की तैयारी कर रहे हो ना। तुम जानते हो बाप को याद करते–2 हम बाप के पास घर जावेंगे। बाप ही याद आना चाहिए। अंतकाल जो.... इस पर गीत भी है ना। अभी बाप कहते हैं (मामे)कं याद करो। बाप आते ही हैं संगम पर। अभी तुम जानते हो शान्ति का सागर बाप आया हुआ है। तुम बाप (से) सुख–शान्ति का वरसा लेते हो। वहा झगड़ा आदि कुछ भी नहीं। यहां तो घर–घर में झगड़ा है। अभी तुमको (सतो)प्रधान बनने लिये खुद बाप समझा रहे हैं। कहते हैं मुझे याद करो। सुखधाम को भी याद करो। देह के धर्म छोड़ मामेकं याद करो यह बाप ही समझाते हैं। यह नालेज फिर कब मिल न सके। इन बातों को तमोप्रधान बुद्धि मनुष्य कुछ भी नहीं जानते हैं। तुच्छ बुद्धि कारण भारत तुच्छ बन गया है। तुम्हारी एम ऑबजेक्ट यह है। तो श्रीमत पर चलना पड़े।

रोज–रोज श्रीमत बच्चों को दी जाती है। कहाँ मुँझते हो तो सम्मुख आओ। दुनियां को भूल जाओ। तो अशान्ति का बोझा जो चढ़ा हुआ है वह उतर जाये। देहीअभिमानी बनने में .....ी मेहनत लगती है। टीचर कृपा नहीं करते हैं। जो अच्छा पढ़ेंगे, पढ़ावेंगे होंगे नवाब .... बुद्धि भटकेंगी तो ..... खराब। ट्रस्टी बना दो। सच्चा2 ट्रस्टी तो एक है। उनके हवाले कर दो। मैं तुम्हारा तो क्या शिवबाबा ... ट्रस्टी हूँ। बाबा सम्भालते हैं। बाबा के पास बहुत युक्तियां हैं। भारत का इस समय नाम ही है वेश्यालय। वेश्या बहुत अच्छे2 होते हैं। आजकल तो बड़े बड़े आदमी वेश्या रखते हैं। स्त्री से बिगड़ते हैं तो उनके सामने वेश्या को ले जाते हैं और गोद में बिठा .... लाते हैं। वह कह देती है अच्छा तुम काला मुंह भी करो समाने मुझे क्या परवाह। एक तो क्या दस .... आओ। ऐसे भी अडोल चित्त हैं। तो बाप से किसम2 की राय लेनी पड़ती है। अबलाओं पर अत्याचार भी हुये हैं। सहन करना ही पड़ेगा। मैं रहमदिल हूँ तो क्या करूँ। छू मंत्र कर दूँ। सारा मदार बच्चों याद की यात्रा के ऊपर है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडनाइट और नमस्ते।

शिव बाबा याद है ?